Amanpreet Kaur and Dr S.N. Singh (Feb, 2022). Modern Society and Gandhism

***International Journal of Economic Perspectives*,*16*(2), 164-170**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

आधुनिक समाज व गांधीवाद

Amanpreet Kaur, Research Scholar,
Department of History,
Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan.

Dr S.N. Singh, Research Supervisor
Department of History,
Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan.

वर्तमान अस्थिरता के दौर में जहां सभी देश विकास व एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं, एक तरफ आर्थिक परिणामों को लेकर लोगों भविष्य के प्रति आशंकित हैं वही मानवीय मूल्यों पर चिंतन हेतु विवश हैं। आज संपूर्ण विश्व बाजारवाद की दौड़ में शामिल हो चुका है, लालच की परिणति युद्ध की सीमा तक चली गई जाती है। ऐसी में गांधीवाद की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक हो जाती है। अब प्रश्न यह उठता है कि यह गांधीवाद है क्या? आज के आधुनिक दौर में धोती व टोपी की कल्पना कहां तक सही है? परंतु यदि हम गांधीवाद को सही तरीके से समझे तो गांधीवाद मात्र एक पहरावा रहन–सहन का ढंग नहीं बल्कि विचारों की शुद्धता से संबंधित वे विचार हैं जो आज भी उतने ही स्वीकार्य हैं जितने कि तत्कालीन समय में।

आज के दौर में आधुनिकता का अर्थ किन्हीं भिन्न ही परिभाषाओं के आधार पर किया जाता है। पुरानी संस्कृति, रिवाजों, राजनीतिक उद्देश्यों, नैतिकता को कसौटी पर उतारने का जो चलन आजकल चल रहा है उसने सभी बुद्धिजीवियों चाहे वह किसी भी समय काल के हो, सब को कटघरे में खड़ा कर दिया है। आज सोशल मीडिया के आधुनिक समय में इतने ज्यादा ज्ञानी व तथाकथित आधुनिक सोच के कहे जाने वाले बुद्धिजीवी पैदा हो रहे हैं जो किसी भी कधावर व्यक्ति जैसे– महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, वीर सावरकर जैसे महानुभावों पर प्रश्न उठाने से भी नहीं चूकते। हमें इनके जीवन से सीखना, प्रेरणात्मक

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author **: Amanpreet Kaur**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(2), 164-170
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

अनुभव का लाभ लेना तो नहीं आया, हां इतना जरूर है कि इन पर प्रश्न उठाकर इनके जीवन को ही सकारात्मक व नकारात्मक के तराजू में तोलने लगे, किसमें कितनी देशभक्ति है, कौन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीयता के भाव से जुड़ा था, इन सवालों पर ही गोष्ठिया करने लगे। विडंबना यह है कि आज हमारे समाज की राजनीतिक पृष्ठभूमि इन्हीं विचारों पर केंद्रित है।

आधुनिक भारत में गांधीजी के विचारों का प्रचार–प्रसार तो जोर शोर से करते हैं परंतु यदि उनके विचारों के मार्ग पर चलने की बात आए तो इसमें हम शून्य पर हैं। गांधीवादी विचार मात्र पुस्तकों व गांधी जयंती पर पढ़ने के लिए ही प्रयोग किए जा रहे हैं। राजनीति में गांधीवाद से जुड़े होने का फायदा उठाने से कोई नहीं चूकना चाहता, जबकि गांधी होने का अनुचित लाभ स्वयं गांधी ने भी नहीं लिया। उन्होंने अपनी आत्मकथा की प्रस्तावना में लिखा–

''मुझे विश्वास है कि इस समिति क्षेत्र में मैं अपनी आत्मकथा में मेरे लेखों में बहुत कुछ मिल सकेगा।———— मुझे सत्य के शास्त्रीय प्रयोगों का वर्णन करना है, और मैं कितना भला हूं यह सब बखान करने की मेरी रती भर भी इच्छा नहीं है।''

स्वतंत्रता के बाद मात्र कुर्सियों पर बैठे नेता, अधिकारी या साहब ही बदले परंतु उनकी लोगों के प्रति भावना वही रही, खुद के हित को जनहित से पहले पूर्ण करना। स्वतंत्रता के बाद महात्मा गांधी ने यह प्रस्ताव रखा था कि कांग्रेस को भंग कर दिया जाए और उसके स्थान पर लोक सेवक समाज की स्थापना की जाए। उनका मानना था कि इससे कांग्रेस की प्रतिष्ठा सदैव बनी रहती व संसार समय–समय पर इस से प्रेरणा लेता व भविष्य में राजनीतिक परिदृश्य में स्वतंत्रता प्राप्ति का श्रेय मात्र एक पार्टी प्रमुख न ले पाता जैसा कि खेल आज राजनीतिक गलियारों में चल रहा है। यह गांधीजी की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होने इसे पहले ही भांप लिया था।

स्वतंत्रता के बाद भारत को विकास की आवश्यकता थी। जिस विकास की बात गांधी

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : **Amanpreet Kaur**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(2), 164-170
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

जी ने गावों में शुरू की थी। उनके उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, वे भारतीय समाज का नक्शा बदलना चाहते थे। उनके मन में भारतीय समाज का एक ऐसा चित्र था, जिसमें सबको अपने परिश्रम के अनुसार जीविका मिलती, बेकारी की कोई समस्या नहीं होती। इन्हीं कार्यों में गांधी जी देश के नवयुवकों को लगाना चाहते थे। लेकिन कांग्रेस ने इसे स्वीकार नहीं किया।

गांधीवादी विचारधारा सिद्धांतों पर आधारित विचारधारा है। यदि हम गांधीजी के संदर्भ में सिद्धांतों की व्याख्या करें तो उनके अनुसार सत्य और अहिंसा के उनके सिद्धांत भारतीय राजनीति के लिए इतने आवश्यक और महत्वपूर्ण थे जितना की धरती पर प्रकाश के लिए सूर्य। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों, धर्म सुधारकों, पुनर्जागरण के बुद्धिजीवियों ने हमें उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपनी संस्कृति सिद्धांतों की पवित्रता में विश्वास के लिए ही प्रेरित नहीं किया, बल्कि लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पूरी तरह से अपने जीवन में सक्रियता से प्रयोग करने का संदेश दिया। मतभेदों को समाप्त करने के लिए मूल्यों के संबंध में वाद–विवाद करने विरोधी के साधनों को हीन करके अथवा समाप्त करने की रीती भारतीय नहीं है। हमारा लक्ष्य विभिन्न समुदायों, जातियों, धार्मिक समूहों में परस्पर मधुर संबंध स्थापित करना है और अनुराग से जीतना है। आधुनिक समय में स्पर्धायुक्त वातावरण में हम धन, सता व शक्ति की प्राप्ति के लिए संघर्षशील है। आज ज्यादातर बुद्धि व शक्ति इसी कार्य में लगी है कि दूसरे को कैसे नीचा दिखाकर ऊपर उठा जाए चाहे उसमें प्रतिद्वंदी के आदर्श को ही नीचा क्यों न दिखाना पड़े।

आज इस प्रकार के वातावरण में लालसा व लोभ के वश में होकर हमने अपने जीवन के सिद्धांतों को कहीं पीछे छोड़ दिया है। जो सिद्धांत किसी समय भारतीयों की पहचान हुआ करते थे आज इन सिद्धांतों का प्रयोग मात्र राजनीति के रूप में ही किया जा रहा है। मोहनदास गांधी आधुनिक विश्व के महानतम व्यक्तियों में से एक थे। उनके महान कार्यो के कारण अनेक इतिहासकारों ने 1920 से 1948 ई. तक के समय को गांधी युग की संज्ञा

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author **: Amanpreet Kaur**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(2), 164-170
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

प्रदान की है। उन्होंने लोगों के सामने ऐसे राजनीतिक विचार रखे जो सत्य, प्रेम, न्याय व अहिंसा के उच्च आद"र्शों से परिपूर्ण थे।वे व्यवहार को सिद्धांत से और कर्म को विश्वास से पृथक नहीं मानते थे। उनके सिद्धांत व विचार उनके व्यवहारिक जीवन का हिस्सा थे।

कुछ समय पहले अमेरिकी पत्रिका ''टाइम्स'' ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हुए नमक सत्याग्रह को दुनिया के सर्वाधिक दस प्रभावशाली आंदोलनों में शुमार किया। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी व्हाइट हाउस में अफ्रीकी महाद्वीप के 50 देशों के युवा नेताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि बदलते परिवेश में युवाओं के गांधी जी से प्रेरणा लेने की आव"यकता है। एक ताकतवर देश के राष्ट्रपति द्वारा हिंसा भरे माहौल में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता का उल्लेख किया जाना, निश्चय ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के सिद्धांतों व उनकी अमिट छाप की विश्वव्यापी स्वीकार्यता को ध्वनित करता है।

विश्वास के लिए, अनुभव के लिए प्रयोग हमें एक ऐसे सत्य से रूबरू कराते हैं। जिसे महसूस किया जा सकता है, जिसमें बदलाव की गुंजाइश होती है और जो रोजमर्रा की व्यवहारिक जिंदगी की पेचीदगियों को अपने में समा लेने की क्षमता रखता है। शायद 1909 में गांधीजी राजनीति के परिपेक्ष्य में अपने विचार रखते हुए इसी दया धर्म के सच की खोज का आह्वान करते नजर आते हैं। यदि हम उन विचारों के बारे में गहराई से विचार करते हैं तो लगता है कि चंपारण सत्याग्रह से भारत छोड़ो आंदोलन तक की अलग रूप रेखा खींची जा सकती है। गांधी जी ने 'हिंद स्वराज' के माध्यम से स्पष्ट किया था कि इतना खतरा हमें बाहरी लोगों से नहीं है जितना कि हमें अपनों से है। और आज के परिवेश में उनका यह पक्ष अनदेखा नहीं किया जा सकता। अपने हितों के लिए जिस प्रकार धर्म, संस्कृति, आदर्शवाद सब को किनारे किया जा रहा है वह किसी से भी छिपा नहीं है और इसी विषय पर गांधी जी ने 1909 में हिंद स्वराज में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था कि–

''मेरी पक्की राय है कि हिंदुस्तान अंग्रेजों से नहीं, बल्कि आजकल की सभ्यता से

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author **: Amanpreet Kaur**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(2), 164-170
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

कुचला जा रहा है उसकी चपेट में वह फस गया है, उसमें से बचने का अभी उपाय है, लेकिन दिन–ब–दिन समय बीतता जा रहा है।

शोधकर्ता विमर्श बनाती हैं और विमर्श से ही तर्कों का निर्माण होता है। जरूरत है बातचीत और अनुभव से नैतिक निर्णयों के निर्माण की प्रक्रिया को तेज करने की। गांधी और गांधीवाद को समझने के लिए गांधीजी के निर्णयों के बीच छिपी हुई नैतिकता की आलोचना और गहराई को समझे बिना हम किसी भी स्तर पर उन्हें प्रतिस्थापित नहीं कर सकते, इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे आज के राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को ही नहीं बल्कि प्रत्येक जनमानस को गांधीवाद की बात करने से पहले उनके विचारों को समझने की आवश्यकता है।

अब प्रश्न पैदा होता है कि कहीं हम गांधी की इस पद्धति के हवाले से गांधीवाद और गांधीवादी सिद्धांतों के कुछ मूल स्त्रोत खोजने की चेष्टा तो नहीं कर रहे? इसका उत्तर देते समय संयम का इस्तेमाल करते हुए मैं कहना चाहूंगी कि गांधी जैसे चिंतक को कुछ स्त्रोत बिंदुओं तक सीमित करना बेहद खतरनाक काम है। जबकि तब जब गांधीजी खुद इस तरह के वैचारिक अमल का खुला विरोध करते हैं। 1945 में नेहरू को लिखे एक खत में गांधी जी कहते हैं–

''मैंने कहा है कि 'हिंद स्वराज' में मैंने जो लिखा है उस राज्य पद्धति पर मैं बिल्कुल कायम हूं। यह सिर्फ कहने की बात नहीं है, लेकिन जो चीज मैंने सन 1909 में लिखी थी उसी चीज का सत्य मैंने अनुभव से आज तक पाया है। आखिर में मैं उसे मानने वाला एक ही रह जाऊं उसका मुझे जरा भी दुख न होगा क्योंकि मैं सत्य जैसा पाता हूं उसका ही साक्षी बन जाता हूं। 'हिंद स्वराज' मेरे सामने नहीं है। अच्छा है कि मैं उसी चित्र को अपनी भाषा में फिर से खींचू।

अपने शोध कार्य हेतु गांधीजी की पुस्तकों का अध्ययन करते समय या अगर मैं कहूं कि

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author **: Amanpreet Kaur**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(2), 164-170
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

गांधीवाद की खोज करते हुए हम एक बार गांधी जी से कोसों दूर हो जाते हैं। उनकी कही बातें, विचार हमें काल्पनिक या सत्य से कहीं दूर नजर आते हैं परंतु अगर हम गहनता से विचार करें तो पाएंगे कि गांधी जी अपने अनुभव व विचार हमें उनमें संदर्भ लिप्त नैतिकताओं की ओर ले जाते हैं जो बेहद ही लचीले हैं, तब क्या हम उन संभव तरीकों की खोज कर सकते हैं जिनके द्वारा गांधी जी के ये विचार हमारे समकालीन बन सके। इसके लिए अनिवार्य है कि हम गांधी जी के विचारों की गहनता को समझकर इन विविध पद्धतियों के सृजनात्मक अध्ययन के जरिए अपने जवाबों का निर्माण करें। आज के परिपेक्ष्य उन समस्याओं की खोज कर जिनका सामना या मुसीबत के रूप में उभरने की बात गांधीजी ने उस समय की थी। गांधीवादी विचारों के साथ आधुनिक समय से तारम्यता स्थापित कर हम उनको अधिक अच्छे से समझ सकते हैं।

प्रश्न वहीं आ कर फिर खड़ा हो जाता है कि ताम्यता तब स्थापित हो जब हम उनका अध्ययन पूर्वकल्पित विचारों से हटकर करें। आज सामाजिक व राजनीतिक गलियारों में गांधीजी कांग्रेस, कांग्रेस गांधी, व ब्रिटिशों के साथ उनकी निष्ठा साबित करने की भरपूर कोशिश की जा रही है। मैं किसी राजनीतिक दल से जुड़ी नहीं हूं और न ही मैं किसी ऐसी विचारधारा पर विश्वास करती हूं मैं तो मात्र अपने शोध कार्य हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, भाषाणों के द्वारा गांधीवादिता व आधुनिक समाज को समझने में प्रयासरत हूं। इसी प्रश्न का उत्तर मुझे शायद इन पंक्तियों द्वारा मिला–

''इस समय राष्ट्रवादी नेताओं के मध्य यह बात वि"ोष थी कि गांधी द्वारा अपने मूलपाठ में ब्रिटिश राज के प्रति निष्ठा अथवा जुड़ाव की अभिव्यक्ति का परिहार किया गया था, लेकिन यह गुण भारत के अतीत के प्रति उनकी परिकल्पना की अवास्तविकता और भारत के भविष्य के लिए उनकी योजनाओं की अव्यावहारिकता को कम नहीं करता।

निष्कर्ष के रूप में मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि गांधीवादी विचारों की सकारात्मकता,

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author **: Amanpreet Kaur**
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022

***International Journal of Economic Perspectives*,*16*(2), 164-170**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

उपयोगिता व उनके विचारों की व्यवहारिकता आज भी उतने ही है जितनी शायद उस समय थी। इसका प्रमाण स्वयं विभिन्न देशों द्वारा गांधीवादीता पर किए जा रहे शोध कार्यों द्वारा साबित हो रहा है। आवश्यकता है तो उन्हें सही दिशा व नेतृत्व मिलने की हमें बस शुरुआत करनी है वह शुरुआत जो स्वयं से शुरू होती है।

खुद में वह बदलाव लाइए जो,
आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

(महात्मा गांधी)

REFERENCES

1. मोहनदास करमचंद गांधी — सत्य के मेरे प्रयोग, अनुवाद सूरज प्रकाश, राज कमल पेपरबैक्स, 2011, पृ. सं. 10
2. राजेंद्र अत्री — महात्मा गांधी (संपूर्ण विचारों का संग्रह) सरला पब्लिकेशन, शिमला, पृ. सं. 43
3. ओम प्रकाश प्रसाद प्रशांत गौरव — भारत का सरल इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, 2012, पृ. सं. 114, 115
4. अरविंद जय तिलक — गांधीजी की प्रसंगिकता, आर्टिकल ऑन गांधी, दैनिक जागरण, जनवरी 28, 2010
5. मोहनदास करमचंद गांधी — हिंद स्वराज, अनुवादक अमृतलाल ठाकुरदास, नवजीवन प्रकाशन 1949, पृ. सं. 24
6. हिलाल अहमद — गांधी का राजनैतिक चेहरा, mkgandhi.org
7. इरफान हबीब — भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रवाद, वाणी प्रकाशन 2020, पृ. सं. 19

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : **Amanpreet Kaur**

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 17 Feb 2022